श्री सहस्त्रकूट जिन चैत्यालय पूजा

सहस्त्रकूट जिनचैत्य परम सुन्दर सुखकारी।
पावन पुण्य निधान दरस है जग अघकारी॥
रोग शोक दुःख हरै विपत्ति दारिद्र नसावै।
जो जन प्रीति लगाय नियमसे नित गुण गावै॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट जिनचैत्यालयेभ्यो ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट जिनचैत्यालयेभ्यो ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक ।

नीर गङ्गको शुचि ल्यायके, कनक कुम्भनमें सु भरायके।
धार दे जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं॥१॥

जगत में जे गन्ध सुहावनी, ल्याय कर ले अति मन भावनी।
तापर जिन सम्मुख हूजिये सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं॥२॥

अमल तन्दुल श्वेत मंगाइये, जासतैं अक्षयपद पाइये।
थाल भर जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान॥३॥

कल्पवृक्षन के अति सोहने, फूल कर में ले मन मोहने।
मदनहर जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं॥४॥

निज सु आतमके हित कारने, भूख की बाधा सु विडारने।
चरुसु ले नि सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं॥५॥

जगत् जीवन मोह भरा हिये, तासुके तम नाशन के लिये।
दीप ले जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं॥६॥

धूप ले धूपायन डारने, अष्ट कर्मन के अघ जारने।
कर्म हर जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं॥७॥

मधुरफल उत्तम संसार में, शिवप्रियाहित भर कर थार में।
शिवपतिके सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥८॥

जल सू आदिक द्रव्य सुधामई, सुखदपद करमें धर ले सही।
शुद्ध मन जिन सम्मुख हूजिये, सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥९॥

जयमाला

दोहा:- सहस्त्रकूट जिन भवन की, भक्ति हिये में धार।
सुनो सरल जयमाल यह, तज मन सकल विकार॥

पद्धरी छन्द

सहस्त्रकूट जिन भवन सार, हैं मध्यलोक के जे मझार।
कृत्रिम सु अकृत्रिम दो प्रकार, भाषे जिनवर जग में निहार॥
जिनमें जिन प्रतिमाको प्रमाण, है सहस एक वसु अधिक जान।
पाषाण धातुमइ अति पवित्र, रचना है सुखदायक विचित्र॥
जिस नाम लेत सब हरै ताप, भव-भव के नाशें सकल पाप।
है तीन लोक आनन्ददाय, सुर नर खग पूजन आय आय॥
कोटी भट्ट राजा श्रीपाल, और अनेकन नृप निहाल।
सहस्त्रकूट जिन-भवन बन्द, कर्मन के काटे अमित फन्द॥
सोहै रचना अद्भुत अटूट, श्रीजिनवर आलय सहस्त्रकूट।
है बनी अनूपम अति विशाल, ताको कछु वर्णन करहिं लाल॥
है भरत क्षेत्र के मध्य धाम, इक आय बुन्देला खण्ड धाम।
ताको जु केन्द्र अति विषदगात, है झांसीनगर सु जग विख्यात॥
तहां श्रीजिन मन्दिर है महान, तामें वेदी शोभै प्रधान।
वर सहस्त्रकूट जिन-भवन सार, है धातुमई रचना अपार॥
तहं स्तुति वन्दन करहि भव्य, अरचें नित लेकर अष्ट द्रव्य।
हमहूं तिनकी पूजन रचाय, कर रहे सकल मन वचन काय॥

घत्ता

सहस्त्रकूट जिन भवन अनपम, जाकी सेव करे मन ल्याय।
ताके मन अति सुमति प्रकाशैं, दुर्गति जग की जाय पलाय॥
वृद्धि होय नित सम्पत्ति गृह में, तातैं धर्म बुद्धि हुलसाय।
पात्र धर्मका वन बसन्त जग, अनुक्रम करके शिवसुख पाय॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद:।